निष्कर्ष-

प्रस्तुत शोध प्रबंध में जब शोधार्थी संगणकीय भाषाविज्ञान की बात करता है तो पाता है कि इस क्षेत्र में ज्यादातर शोध अंग्रेजी भाषा में हो रहे हैं और अधिकतर संगणकीय उपकरण (रूपवैज्ञानिक विश्लेषक, रूपवैज्ञानिक उत्पादक, व्याकरणिक कोटि टैगर और पार्सर) भी अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के लिए उपलब्ध हैं। जब अंग्रेजी भाषा और भारतीय भाषा की स्थिति की तुलना की जाए तो इसमें एक बड़ा अंतर देखने को मिलता है। इस अंतर को कम करने के लिए भारतीय भाषाओं के लिए संगणकीय भाषाविज्ञान में शोध करने की जरूरत है, जब हम भारतीय भाषाओं के लिए संगणकीय भाषावैज्ञानिक शोध करते हैं तो सबसे पहले इसकी संरचना पर विचार करते हैं। अंग्रेजी में एक निश्चित शब्द क्रम है, एवं यह एक स्थानांतरित भाषा है। तथा इसमें रूपात्मकता का गुण अधिक नहीं पाया जाता है। लेकिन भारतीय भाषाओं का शब्द क्रम स्वतंत्र होता है तथा इसकी शब्द रूप प्रक्रिया भी समृद्ध है। यह दो कारक भारतीय भाषा में शोध करने के लिए नई दिशा प्रदान करते हैं।

इस टूल के विकास से मगही भाषा के विकास में सहायता मिलेगी। इस टूल में सिर्फ रूढ़ क्रियाओं के लिए विश्लेषक का निर्माण किया गया है, आगे इस टूल की सहायता से पूर्ण क्रियात्मक विश्लेषक का निर्माण किया जा सकेगा। इस टूल की सहायता भाषा के अन्य टूल को बनाने के लिए भी की जा सकेगी।

इस टूल के द्वारा मगही भाषा को तथा मगही भाषियों को मशीनी प्रयोग के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। लोग मगही भाषा के अन्य टूल का निर्माण इस टूल की सहायता से कर सकेंगे। मगही भाषा के शब्दों को अथवा भाषा के अस्तित्व को बचाने के लिए इसका मशीनीकरण

अतिआवश्यक है। जिन लोगों के नजर में यह भाषा सिर्फ एक गाँव की भाषा है उनका नजरिया इसके पश्चात बदल सकता है और लोग इसके शोध के लिए प्रेरित होंगे।

किन्ही दो भाषाओं के लिए मशीनी अनुवादक के निर्माण हेतु शोधार्थी को भाषा के रीढ़ मानी जाने वाली शब्दावली की आवश्यकता पड़ती है। यदि शोधार्थी के पास ऐसी शब्दावली है जिसमें सभी मूल शब्दों से बनने वाली हर शब्द रचना दी गई हो और विशेषतः इनकी विशेषताएं हर शब्द रचना के लिए अलग-अलग दी गई हों तो निश्चित ही क्रिया रूपात्मक विश्लेषक की आवश्यकता नहीं होगी। शोधार्थी सिर्फ कोष की सहायता से उसकी विशेषताएं मालूम कर लेंगे। परन्तु इस प्रारूप में बहुत सी समस्याएं हैं, सबसे पहली तो यह कि इतने सारे शब्दों के लिए अलग-अलग मूल शब्दों के अलग-अलग शब्द रचनाओं को सूचीबद्ध करना। इसके लिए इसे बहुत अधिक स्थान की आवश्यकता होगी। इन सभी से बचकर रूपात्मक विश्लेषण के लिए रूपात्मक विश्लेषक का निर्माण एक बहुत ही सही मार्ग है।

यह मगही भाषा के संरक्षण के लिए लाभकारी होगा। मगही भाषा में इसके मूल भाषा के शब्द विलुप्त होते जा रहे हैं इस टूल की सहायता से मगही के शब्दों का संरक्षण करने में सहायता मिल सकती है। इस भाषा के प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या बहुत तेजी से कम हो रही है इस भाषा को उपयोग में बनाये रखने के लिए भी यह बहुत उपयोगी होगा। इस भाषा के लिए अन्य मशीनी टूल बनाने में यह टूल उपयोगी होगा क्योंकि शब्द की सबसे छोटी इकाई पर इस शोध में कार्य किया गया है। मगही भाषी जो अपनी ही मातृभाषा को गाँव की भाषा समझ कर अन्य भाषाओं का प्रयोग करते हैं उनके लिए यह शोध कार्य प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

इसका उपयोग मगही भाषा के अन्य टूल के विकास के लिए किया जा सकेगा। अभी इस टूल में सभी क्रियाओं को न लेकर सिर्फ रूढ़ क्रियाओं के लिए कार्य किया गया है, अतः यह सिर्फ देवनागरी लिपि आधारित मगही के रूढ़ क्रियाओं का ही विश्लेषण करने में सक्षम होगा।